❖ अमरावती, गुरुवार २४ अक्तुबर से ३० नवंबर २०२५ ❖ वर्ष १६ ❖ अंक २३ मूल्य २०/– पृष्ठ १६+८ ❖पोस्टल रजि. नं. ATI/RNP/268/2025-2027 डाक : शुक्रवार – शनिवार

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

विदर्भ स्वाभिमान

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे
प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे
संयुक्त परिवार । मानव सेवा । पर्यावरण संतुलन
दीपावली विशेषांक

बाबूजी के आदर्श

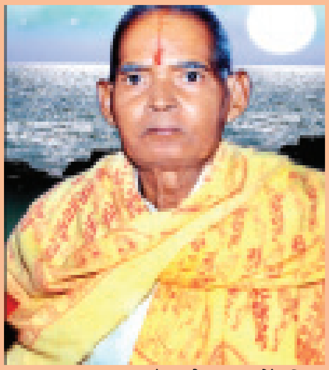

जीवन क्षणभंगुर है. लाखों की दौलत कमाने के लिए कभी याद नहीं किया जाता है. लेकिन जिन लोगों ने जीवन में धर्म,कर्म और नेक कामों में सदैव योगदान दिया है, उन्हें कोई भूलता भी नहीं है. आपका जीवन क्षणभंगुर है लेकिन आपके कर्म आपको अमरत्व प्रदान करते हैं. दीवाली में खुशियां बांटते रहो, कभी कम नहीं होगी.

खुशी-त्याग संकल्प का प्रतीक है दीपपर्व

बांटनेवाला रहता है खुश, हमारी क्षमता का लाभ दूसरों को भी हुआ तो बेहतरीन

हर भारतीय पर्व हमें सीख देते हैं. भारतीय संस्कृति में दीप पर्व हमें त्याग का जहां संदेश देता है, वहीं स्वयं कितनी भी तकलीफ क्यों नहीं हो लेकिन हमारी वजह से किसी को तकलीफ नहीं होना चाहिए, यह संदेश देता है. यही कारण है कि दीपावली केवल पर्व नहीं बल्कि विश्वस्तर पर त्याग का संदेश देने वाला पर्व होता है. विदर्भ स्वाभिमान हमेशा अलग विशेषांकों के लिए सुख्यात है. इस बार बिखरते परिवारों को ध्यान में रखते हुए संयुक्त परिवार, मानव सेवा और पर्यावरण संतुलन को ध्यान में

रखते हुए पाठकों को बेहतरीन संदेश देने का प्रयास किया गया है. हमें विश्वास है कि अखबारिता क्षेत्र में इस तरह का यह नया प्रयास सभी को भाएगा. जीवन में खुशियों के लिए परिवार से बड़ा दूसरा मंच नहीं हो सकता है और खुशियों के लिए पर्यावरण संतुलन जरूरी होता है. इसके अलावा आत्मिक सुकून के लिए हमें परमात्मा ने जो कुछ दिया है, उसमें से हम किसी की खुशी का माध्यम

(शेष २ पर)

खुश रहें और खुशियां बांटने से बढ़ती हैं-सुदर्शन गांग

अमरावती- जीवन में खुशी,प्रेम,ज्ञान और सम्मान यह सदा बांटने से बढ़ता है. जीवन में जो इस बात को समझ जाता है, उसे कभी निराश होने की नौबत नहीं आती है. परमात्मा ने जिस रूप में भेजा है, उसी रूप में हमे बिना कुछ साथ लिए बुलाता है, ऐसे में जो उम्र हमें प्रभु ने उपहार में दी है, उस दौरान हमारे द्वारा किए जाने वाले कर्म ही हमें सम्मान,अपमान दिलाते हैं. हम किसी को प्रसन्न नहीं रख सकते हैं तो नाराज कोई हमसे हो, ऐसा प्रयास नहीं करना चाहिए. इससे जीवन संवर जाता है. किसी को खुशी देकर मिलने वाला सुकून करोड़ों की दौलत

शेष पेज 15 पर

सुभाषचंद्र जे. दुबे

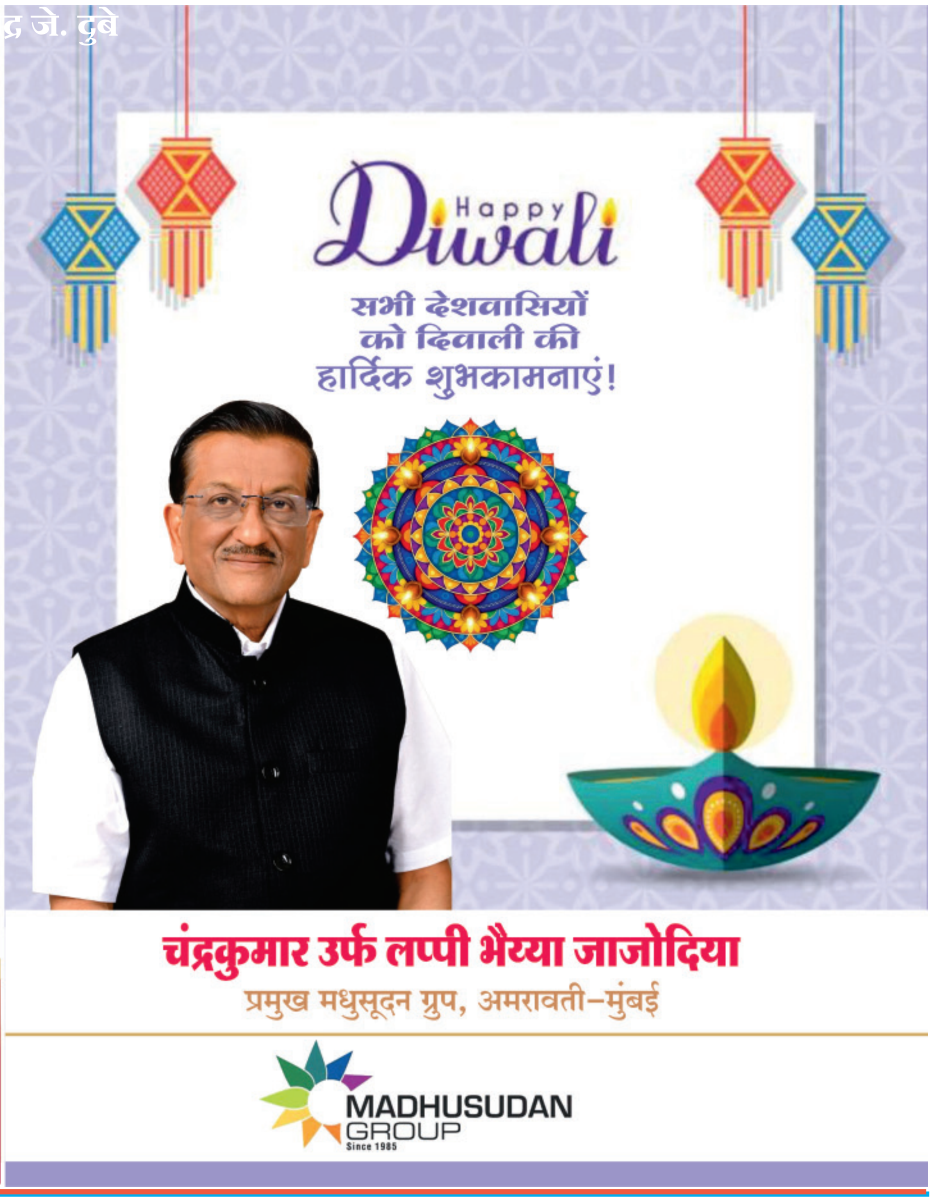

संपादकीय ......

उजाले से उजली जिंदगी की ओर बढ़ें

भारतीय संस्कृति और संस्कार विश्व में सभी के लिए कल्याण के साथ ही पूज्यनीय होते हैं. यहां के त्यौहार केवल त्यौहार नहीं बल्कि मानवता, प्रेम, त्याग, समर्पण का संदेश देते हैं. यही कारण है कि हर त्यौहार हर भारतीय के दिल में रहते हैं. दीपावली को त्यौहारों का राजा कहना गलत नहीं होगा. पांच दिनों तक होने वाला यह आयोजन हर भारतीय और विश्वस्तर पर मनाया जाता है. विदर्भ स्वाभिमान परिवार की सभी देशवासियों और विश्वभर में अपने कार्यों से भारत का नाम आलोकित करने वाले हर भारतीयों को मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं. यह पर्व त्याग की जहां सीख देता है, वहीं उजाले से उजले जीवन की ओर जाने की प्रेरणा देता है. दीपावली के दौरान देशभर में बाजार जहां गुलजार रहता है, वहीं इस त्यौहार के कारण हजारों लोगों को रोजगार भी मिलता है. मिट्टी के दीपक के साथ ही अन्य विभिन्न वस्तुओं से बाजार में कईयों को रोजगार का मौका मिलता है. हर चेहरे पर मुस्कराहट और खुशियां देने का काम यह पर्व करता है.

दीपावली केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल प्रतीक है. यह वह क्षण है जब अंधकार पर प्रकाश, असत्य पर सत्य और निराशा पर आशा की विजय का संदेश हर घर-आंगन में झिलमिलाता है. दीयों की पंक्तियाँ हमें स्मरण कराती हैं कि चाहे जीवन कितना भी अंधकारमय क्यों न हो, एक छोटा दीप भी दिशा दिखा सकता है.आज के बदलते समाज में दीपावली का अर्थ केवल सजावट, पटाखों और खरीदारी तक सीमित नहीं रहना चाहिए. इस पर्व का वास्तविक संदेश है, मन का अंधकार मिटाना. जब हमारे भीतर ईर्ष्या, लोभ, क्रोध और अहंकार जैसे अंधेरे समाप्त होंगे, तभी जीवन में सच्चा प्रकाश फैलेगा.दीपावली का आर्थिक पक्ष भी महत्वपूर्ण है.

यह पर्व देश की अर्थव्यवस्था में नई ऊर्जा भरता है. अमरावती शहर में ही हजार करोड़ रूपए से अधिक का कारोबार हर क्षेत्र का होता होगा. व्यापारी वर्ग से लेकर मजदूर तक हर कोई इस मौसम में नई उम्मीदों के साथ कार्य करता है. लेकिन इसी के साथ हमें पर्यावरण की रक्षा का भी ध्यान रखना होगा. ध्वनि और वायु प्रदूषण से मुक्त, हरित दीपावली मनाना आज की आवश्यकता है. मिट्टी के दीये जलाएँ, स्थानीय उत्पादों को अपनाएँ और प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखें.दीपों का यह उत्सव सामाजिक समरसता का भी प्रतीक है. इस दिन हमें समाज के उन कोनों तक भी रोशनी पहुँचानी चाहिए जहाँ आज भी अंधकार है,गरीबों, वंचितों, वृद्धाश्रमों और अनाथालयों तक. सच्ची दीपावली वही होगी जब हर चेहरा मुस्कराए और हर जीवन में आशा का दीप प्रज्वलित हो.इस दीपोत्सव पर हम सब मिलकर संकल्प लें कि अपने भीतर और समाज में अच्छाई का दीप जलाएँ, नकारात्मकता को पीछे छोड़ें,और भारत को उजाले की उस राह पर ले जाएँ, जहाँ हर दिल में प्रेम, सद्भाव और प्रकाश बसे. साथ ही स्वदेशी वस्तुओं का ही इस्तेमाल करने तथा राष्ट्र को मजबूत बनाने का संकल्प लेना चाहिए.विदर्भ स्वाभिमान परिवार की अपने पाठकों,आजीवन सदस्यों, विज्ञापनदाताओं के साथ सभी को दीप पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं.

पृष्ठ १ से आगे

अगर बन सके तो निश्चित तौर पर दुनिया कभी भूलती नहीं है. तीनों ही विषयों को लेकर दीपावली विशेषांक प्रकाशित हुआ है.

भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता उसका संयुक्त परिवार प्रणाली रही है. यह केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक पद्धति है. संयुक्त परिवार में प्रेम, सहयोग, त्याग, सेवा और परस्पर सम्मान की भावना स्वाभाविक रूप से पनपती है. जब एक ही छत के नीचे तीन पीढ़ियाँ रहती हैं, तो वहां अनुभव, शिक्षा और संस्कार का सुंदर संगम बनता है.संयुक्त परिवार का सीधा संबंध पर्यावरण संतुलन से भी जुड़ा है. जब कई सदस्य एक ही घर में साथ रहते हैं, तो संसाधनों का साझा उपयोग होता है.जैसे बिजली, पानी, ईंधन और भूमि का. इससे अनावश्यक खर्च और प्रदूषण दोनों घटते हैं. प्रकृति के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी का भाव परिवार से ही उत्पन्न होता है. परिवार में जहां सभी में सुरक्षा का भाव होता है, वहीं यह विश्वास भी होता है कि किसी तरह की दिक्कत आने के बाद उनके साथ पूरा परिवार है. एकता की ताकत यहां असंभव को भी संभव कर देती है. आज किशोर बिगड़ रहे हैं, इसमें संयुक्त परिवार का अभाव सबसे बड़ी भूमिका निभाता है. पहले पिता के इतना ही दवाब और डर चाचा-चाची,बड़े पिता का रहने के बाद कभी बच्चे गलत लाइन में नहीं जाते थे.

पर्यावरण संतुलन है जरूरी

जीवन में प्रकृति का कर्ज इंसान कभी नहीं फेड़ सकता है. लेकिन दुर्भाग्य कहें कि आज लेने की प्रवृत्ति वाला इंसान दिल खोलकर देने वाली प्रकृति के साथ मजाक करता है. कोरोना ने दो साल में लोगों को बहुत कुछ सिखाया था लेकिन इंसान इसे भी बहुत जल्दी भूल गया. बुजुर्गों की शिक्षा से बच्चे सीखते हैं कि पेड़ लगाना, जल बचाना और पशु-पक्षियों की रक्षा करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है. इस प्रकार, संयुक्त परिवार न केवल सामाजिक बंधन मजबूत करता है बल्कि पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने में भी योगदान देता है. आनंद परिवार, जाजोदिया परिवार,हबलानी परिवार, पूरणलाल परिवार, दुबे परिवार, वैद्य परिवार सहित आज भी अमरावती में ऐसे संयुक्त परिवार हैं, जिनकी प्रगति, सामाजिक सेवा का भाव सभी के लिए यादगार बनता है. धन की चाह ने खुशियां छीन ली है और हार्टफेल होने को उपहार में दिया है. आज संयुक्त परिवार के अभाव में बच्चे संवेदनहीन हो रहे हैं और अपने परिवार तथा माता-पिता से आत्मीयता का संबंध खत्म हो रहा है. अपनी ही औलाद जब माता-पिता को वृद्धाश्रम में छोड़ती है तो इसके लिए केवल वही जिम्मेदार नहीं है बल्कि उसे दिए संस्कारों के लिए माता-पिता भी उतने ही जिम्मेदार होते हैं.

मानव सेवा से संतोष मिलता है

परिवार की एकता से तरक्की बढ़ती है, एकता से सम्पन्नता आती है. इसके बाद हर व्यक्ति को जरूरतमंदों के लिए कुछ करने का प्रयास करना चाहिए. निश्चित रूप से इससे तरक्की बढ़ती है. धर्म माफ करता है लेकिन कर्म कभी माफ नहीं करता है. इसलिए सदा अच्छा कर्म करने का प्रयास करना चाहिए. इसी परिवार में मानव सेवा का भी संस्कार जन्म लेता है. जब हम अपने बुजुर्गों, बीमारों और जरूरतमंदों की सेवा घर में करते हैं, तो समाज में भी दूसरों की सेवा करने का भाव उत्पन्न होता है. सेवा भावना का आरंभ घर से होता है, और वही आगे चलकर समाज में करुणा और एकता का रूप लेती है. बागबान फिल्म में जो सच्चाई दिखाई गयी है, वह कई परिवारों के लिए सबक हो सकती है लेकिन इसमें जिस अनाथ बच्चे आलोक को राज मल्होत्रा ने पढ़ाया लिखाया, उसके दिल में माता-पिता ही नहीं तो भगवान जैसा प्रेम इस बात का सबूत होता है कि हम जब किसी के लिए कुछ करते हैं तो एक्शन का रिएक्शन होता ही है. आलोक के प्रेम और उसकी भावनाओं को समझते हुए यह आसानी से समझा जा सकता है. अपने परिवार के लिए करने के साथ ही जीवन में किसी ऐसे को भी सहारा देने का प्रयास करें,जिसे आपकी छोटी सी मदद की जरूरत है. वह कभी जीवन में आपको नहीं भूलता है. सकारात्मकता में तमाम नकारात्मकता को खत्म करने की ताकत होती है. जरूरी है तो केवल उसे बढ़ाने में अपना योगदान देने की. निश्चित ही जीवन में आप जब अपनाने लगेंगे तो स्वयं यह बात दूसरों को बताएंगे, मैं तो कोरोना के बाद जब बचा तो जीने का अपना अंदाज बदल लिया है, आप भी बदल लें तो निश्चित ही बची जिंदगी खुशियों में ही बीतेगी, वर्ना स्वयं का पेट तो जानवर भी पाल लेते हैं. लेकिन मानव और उनमें कुछ अंतर अवश्य रहना चाहिए.

आज जब एकल परिवार बढ़ रहे हैं, तो न केवल पारिवारिक संबंध कमजोर हो रहे हैं, बल्कि स्वार्थ और उपभोक्तावाद के कारण पर्यावरणीय असंतुलन भी बढ़ा है. इसलिए आवश्यकता है कि हम संयुक्त परिवार की परंपरा को पुनर्जीवित करें, जिससे मानवता, प्रकृति और समाज तीनों का संतुलन बना रहे.

हिन्दी साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान यह पत्र मालिक, प्रकाशक, सम्पादक-सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे ने एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,जिला अमरावती (महाराष्ट्र)से मुद्रित कर प्रकाशित किया है. मुद्रक-श्री संदीप बागडे,एस.बी. प्रिन्टर्स, गांधी चौक,अमरावती.जिला अमरावती (महाराष्ट्र).प्रकाशन स्थल-साप्ताहिक विदर्भ स्वाभिमान, छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती. (महाराष्ट्र) मुख्य सम्पादक-सुभाषचंद्र जे.दुबे (पी.आर.बी.कानून के अनुसार सर्वस्वी जवाबदार).मुख्य प्रबंधक- वीणा दुबे,(सभी विवाद अमरावती न्यायालय अंतर्गत)आर.एन.आई.रजिस्ट्रेशन नंबर MAHHIN/2010/43881
मोबाइल नं.-09423426199,8855019189/8208407139
E-Mail-vidarbh.swabhiman@gmail.com | www.vidarbhswabhiman

त्याग और उजाले का संदेश देती है दीपावली

संभागीय आयुक्त श्वेता सिंघल का प्रतिपादन, सभी को दी शुभकामनाएं

विदर्भ स्वाभिमान, २३ अक्टूबर अमरावती - दीपावली का त्योहार केवल त्यौहार ही नहीं बल्कि मानवता, प्रकाश का संदेश देने वाला पर्व है. जिस प्रकार कितना भी घना अंधेरा हो, एक दीपक उस अंधेरे को खत्म कर सकता है, इतना ही नहीं तो एक दीपक से लाखों दीपक जलाए जा सकते हैं, इसी तरह हमारा जीवन सभी के जीवन में खुशियों और प्रकाश देने वाला होना चाहिए. इस आशय का प्रतिपादन संभागीय आयुक्त और संवेदनशील अधिकारी डा.श्वेता सिंघल ने किया. उन्होंने दीपावली के पावन पर्व पर सभी को शुभकामनाएं देते हुए सुख समृद्धि और बेहतरीन

स्वास्थ्य की कामना की. उनके मुताबिक मानवता की सेवा से बड़ी दूसरी सेवा नहीं हो सकती है.

दीपों का पर्व दिवाली केवल रोशनी का नहीं, बल्कि त्याग और सद्भावना का प्रतीक है.यह हमें सिखाती है कि जैसे दीपक स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है, वैसे ही हमें भी अपने स्वार्थ, अहंकार और अंधकारमय विचारों का त्याग कर समाज में उजाला फैलाना चाहिए. दिवाली का अर्थ केवल घरों को सजाना नहीं, बल्कि मन के अंधकार को मिटाना है.जब हम ईर्ष्या, क्रोध और लोभ को त्यागकर प्रेम, करुणा और सहयोग को अपनाते हैं, तभी सच्चे अर्थों में दिवाली मनाई जाती है. हर दीपक हमें यह प्रेरणा देता है कि बलिदान ही प्रकाश का आधार है.जो दूसरों के लिए जलता है, वही संसार को दिशा देता है. उनके मुताबिक इस दिवाली हम सब मिलकर संकल्प लें स्वार्थ का त्याग करें, मानवता का प्रकाश फैलाएं, ताकि हर हृदय में सच्ची दिवाली मन सके.

आदर्श समाजसेवी, धर्म योद्धा और राष्ट्र प्रेमी लप्पीभैया

अमरावती शहर का नाम सेवा के क्षेत्र में समूचे देश में चमकाने वाले जाने माने समाजसेवी, दानशूर चंद्रकुमार उर्फ लप्पीभैया जाजोदिया आसमानी बुलंदी छूने के बाद भी जमीन पर रहने वाले आदर्श समाज सेवी है. शहर ही नहीं तो समूचे महाराष्ट्र में जहां सैकड़ो श्रीमद् भागवत कथाओं के माध्यम से ग्राम स्तर पर युवाओं को व्यसन से मुक्त करने का बीड़ा उठाया है, वहीं गुरुजनों और संत जनों के प्रति उनके मन में अपार प्रेम रहता है. अमरावती में अंतर्राष्ट्रीय कथाकार पंडित प्रदीप मिश्रा की शिव महापुराण कथा के आयोजन में उनका योगदान है और स्वयं पंडित जी ने भी इसकी सराहना की. वैष्णव जन ते तेने कहिये जे पीर पराई जाने रे के सिध्दांत पर वह कार्य करते है. बिना किसी अपेक्षा के शहर के लिए सदैव करने का भाव रखने वाले चंद्रकुमार नाम के मुताबिक है जहां शालीन, सादगी पसंद और मानवता की सेवा के लिए सदा तत्पर रहते हैं, वहीं वे अमरावती में रहते समय उनके घर पर उमड़ने वाली भीड़ से किसी को भी लगता है कि वह विधायक अथवा सांसद होंगे. आत्महत्या करने वाले किसानों के बच्चों की शिक्षा की बात हो

अथवा परिवार पर आई विपदा के समय मदद की बात हो, सेवा भाव की यह योद्धा सदा तत्पर पर रहते हैं. माता-पिता के प्रति तथा संयुक्त परिवार में वह जहां विश्वास रखते हैं वही पर्यावरण संतुलन के क्षेत्र में भी जाजोदिया परिवार तथा मधुसूदन ग्रुप सदा अग्रणी रहता है. स्वर्गीय पिता मधुसूदन जाजोदिया की स्मृति में अमरावती में दंपति रक्तदान शिविर शु डिग्री करने और महिलाओं को भी रक्तदान के लिए प्रोत्साहित करने का श्रेय भी उन्हें ही जाता है. सर्वगुण संपन्न होने के बावजूद उनकी विनम्रता और शालीनता पहली मुलाकात में किसी को प्रभावित करती है. विदर्भ रत्न के साथ उद्योग रत्न सहित अभी तक दो दर्जन से अधिक पुरस्कार प्राप्त करने के बाद भी उनमें कभी अहम भाव नहीं रहता है. जीवन में धन दौलत सभी कमाते हैं लेकिन उनके जैसे बहुत कम लोग होते हैं जिनके मन में अपनी कमाई का हिस्सा समाज तथा राष्ट्र के लिए खर्च करने की भावना होती है. वह अमरावती के भूषण है, जिन्होंने पूरा जीवन समाज सेवा, धर्म सेवा और राष्ट्र सेवा के लिए समर्पित किया है. विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत में अपने बचपन के किस्से को बताते हुए कहा था कि जीवन की अपनी पहली स्कॉलरशिप किसी जरूरतमंद को देने के बाद उन्हें अपार खुशी और सुकून मिला था, इसके बाद से प्रभु की कृपा से आर्थिक संपन्नता के बाद उन्होंने यह सिलसिला जारी रखा और जब तक प्रभु की इच्छा होगी तब तक यह सिलसिला चलता रहेगा. दीपावली के पावन पर्व पर उन्होंने समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए सभी का जीवन सुख, समृद्धि और उजाले के साथ ही स्वस्थ रहने की कामना की. उनके मुताबिक जाति-धर्म को भुलाते हुए प्रधानमंत्र नरेन्द्र मोदी, पतंजलि योगपीठ केप्रमुख स्वामी रामदेव सहित अन्यों द्वारा राष्ट्र निर्माण के लिए किए जाने वाले प्रयासों को साथ देकर सभी को राष्ट्र के लिए प्रयास करना चाहिए. दीपावली में सभी को खुशियां बांटने का संकल्प ले.

अर्चित जाजोदिया ने गोद लिया एकल विद्यालय

अमरावती:- सुविख्यात समाजसेवी और दानदाता लप्पीभैया जाजोदिया के छोटे पुत्र अर्चित ने भी पिता के नक्शे कदम पर चलते हुए अपने जन्मदिन पर सेवा का जज्बा दिखाया। वनबंधु परिषद व्दारा चलाई जानेवाली

एकल विद्यालय को गोद लिया।गौरतलब है की वनबंधु परिषद् व्दारा मेलघाट के दुर्गम क्षेत्र में आदिवासियो के लिए एकल विद्यालय चलाता है। आदिवासियो को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने का प्रमुख उद्देश्य है। अर्चित जाजोदिया ने अपने जन्मदिन के अवसर पर एकल विद्यालय गोद लेकर ३१ हजार का धनादेश वनबंधु परिषद को सौंपा। इस अवसर पर ओमप्रकाश नावंदर, सुमित प्रमुखता से उपस्थित थे।अर्चित जाजोदिया ने अपने जन्मदिन पर एकल विद्यालय को गोद लेने के साथ आगामी दिनो में ।। विद्यालय गोद लेने का संकल्प लिया है। इस अवसर पर शिव प्रतिष्ठान हिंदुस्थान के पदाधिकारियो ने अर्चित जाजोदिया का सत्कार कर जन्मदिन की शुभकामनाएं दी।

अमरावती जिले में राजनीति के नायक हैं रवि राणा

विदर्भ स्वाभिमान,२३ अक्तूबर

अमरावती- हर भारतीय के लिए दीपावली का पर्व जहां अपार खुशी का पर्व रहता है, वहीं राजनीतिक सफलता के बाद लोगों को भूलने वालों के इस दौर में आज भी विधायक रवि राणा, पूर्व सांसद नवनीत राणा जैसे नेता हैं, जिन्होंने अपना गठबंधन जनता से किया है. लाखों रूपए की मदद दीपावली पर बिना जाति-धर्म देखे करने वाले विधायक रवि राणा को अमरावती में जनता के दिलों में रहने वाले नायक कहना गलत नहीं होगा. बचपन में स्वयं संघर्षो से जूझने के कारण उन्होंने गरीबी और संघर्ष को करीबी से देखा है. यही कारण है कि उनके मन में जनता,गरीबों, दीन-दलितों,पीड़ितों के प्रति अपार प्रेम होता है. दोनों कै कहना है कि जो लोग राष्ट्र को प्रथम स्थान पर रखते हैं, ऐसे लोगों के प्रति उनके मन में अपार प्रेम है. सहायता करते समय वह कभी जाति,धर्म नहीं देखते हैं. आज भी उनका यही क्रम शुरु डिग्री है. लेकिन उनके लिए महत्व नहीं रखती कास्ट, सबसे पहले रहना चाहिए सभी के लिए राष्ट्र. विधायक रवि राणा के मुताबिक जनता का अपार प्रेम जहां राणा दम्पति की

ताकत बनता है, वहीं जनता के आशिर्वाद से उन्हें बहुत कुछ मिला है, ऐसे में वे लौटाने का निरंतर प्रयास करते हैं. वे कहते हैं कि मानवता की सेवा की सीख उन्हें अपने माता-पिता तथा परिवार से मिली है. ऐसे में अपनी सम्पन्नता के सही हकदार वे जनता को समझते हैं, जो तीन टर्म से लगातार उनमें अपार विश्वास जताती है. जनता के प्रति उनका यही प्रेम है कि बडनेरा में विधायकी का जहां रिकार्ड बना लिया है, वहीं दूसरी ओर आज भी आश्वासन समिति के अध्यक्ष के रूप में राज्यमंत्री के पद पर आसीन होकर उनकी विनम्रता हर मामले में अलग होती है. वे कहते हैं कि जनता ने अपार प्रेम और विश्वास दिया है. वर्ना बिना किसी राजनीतिक घराने के रहने के बाद भी विधायकी की हैट्रिक करना संभव नहीं है. वे कहते हैं कि जीवनभर भी जनता की सेवा करते रहें तो भी जनता के प्रेम तथा अपनेपन के कर्ज को उतार नहीं सकते हैं. उनके मुताबिक वे सदा जनता के कर्ज में रहना ही पसंद करते हैं.

माता-पिता के साथ बड़े भाई सुनील राणा को जहां अपनी ताकत मानते हैं, वहीं दूसरी ओर सुनील राणा सहित परिवार की एकता सबसे बड़ी ताकत है. वे कहते हैं कि जनता के साथ ही जिन कार्यकर्ताओं ने उन्हें बढ़ाने के लिए पूरा जीवन समर्पित किया, ऐसे पार्टी कार्यकर्ता उनकी सबसे बड़ी ताकत है. राष्ट्रीय युवा स्वाभिमान पार्टी में कमलकिशोर मालानी, अजय मोरय्या सहित पार्टी के हर कार्यकर्ता उनकी ताकत हैं. वे कहते हैं कि जनता ने अपार प्रेम दिया है, उसका कर्ज कभी नहीं उतार सकते हैं. ऐसे में जीवनभर जनता के प्रति विश्वास के रिश्ते को बढ़ाने के साथ ही उसे और मजबूत करने का काम करते रहेंगे. वे बचपन से ही संवेदनशील रहने के कारण किसी भी पीड़ित को देखकर भावुक हो जाते हैं. राजनीति में रहकर भी मानवता की सेवा को अत्याधिक महत्व देने वाले लोकप्रिय नेता हैं. जीवन में मेरे पर माता-पिता का आशिर्वाद, प्रभु की कृपा और जनता का अपार प्रेम रहा है. इसका मैं शब्दों में बखान नहीं कर सकता हूं. मैं किसी प्रतिष्ठित राजनीतिक घराने से भी नहीं जुड़ा हूं लेकिन मुझे मेरी जनता का प्यार सबसे अधिक मिला है. यही कारण है कि बडनेरा में जीत का हेट्रिक किया है.

मैंने सदैव सभी को साथ लेकर काम करने का काम किया है. इतना ही नहीं तो राजनीति में आने से पहले भी मेरा जीवन सामाजिक कामों के लिए सदैव समर्पित रहता है. मैं दिल में कुछ नहीं रखता है, लेकिन मेरे दिल में कभी किसी के प्रति गलत भावना भी नहीं रहती है.जनता का प्यार मेरे लिए सदैव सर्वोच्च रहा है. इन शब्दों में बडनेरा में जीत की हैट्रिक का रिकार्ड बनाने वाले विधायक रवि राणा ने किया. उनके मुताबिक स्पष्टता उनकी खूबी है. उन्हें घुमा-फिराकर बोलना नहीं आता है. यही कारण है कि कईयों को उनकी बोल अच्छी नहीं लगती है. जनता के प्यार से ही उन्हें सब कुछ मिला है, ऐसे में उनके लिए जनता ही सबसे पहले होती है. जनता का प्यार जितना उन्हें मिला, उतना आज तक बडनेरा विधानसभा क्षेत्र में किसी को नहीं मिला है.

शिक्षा के साथ संस्कार भी जरूरी

प्राचार्य मनीषा संगर की मौलिक सलाह

अमरावती-सफलतम जीवन के लिए शिक्षा और संस्कार अत्यधिक जरूरी होता है. शिक्षा हमें ज्ञानी बन सकती है लेकिन संस्कार हमें अच्छा इंसान बनते हैं. अच्छा इंसान बनने के बाद निश्चित तौर पर जीवन में सब तरफ सफलता और सम्मान मिलता है. बच्चों को शिक्षा स्कूल में मिल सकती है लेकिन संस्कार घर से ही मिलते हैं. शिक्षा के इतना ही महत्व जीवन में संस्कारों का होता है, इस आशय का मत पोदार इंटरनेशनल स्कूल कठोरा नाका की प्राचार्य मनीषा संगर ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान के दिवाली विशेषांक को शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कहा कि इस अखबार के माध्यम से जिस तरह से सकारात्मक पत्रकारिता की जाती है आज के दौर में इस तरह की पत्रकारिता न केवल मुश्किल बल्कि दुर्लभ है. उनके मुताबिक पोदार इंटरनेशनल स्कूल शिक्षा के साथ बच्चों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है. दीपावली के पावन पर्व पर उन्होंने सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दी. आज के आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व तो सभी समझते हैं, लेकिन यदि शिक्षा के साथ संस्कार न हों तो वह अधूरी मानी जाती है. केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना ही मनुष्य को महान नहीं बनाता, बल्कि उस ज्ञान का सही उपयोग करना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना ही सच्ची शिक्षा कहलाती है. छात्रों के जीवन को संवारने में सदा अग्रणी रहने वाली प्राचार्य मनीषा संगर ने कहा कि घर पहला विद्यालय है और माता-पिता पहले गुरु. बच्चों में संस्कार बचपन से ही रोपे जाने चाहिए। विद्यालय में शिक्षकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है-वे केवल विषय नहीं सिखाते, बल्कि बच्चों को आदर्श नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित करते हैं.

सही मार्गदर्शन से टल सकती है आत्महत्या

मानसोपचार विशेषज्ञ डॉ.लक्ष्मीकांत राठी ने कहा, मानसोपचार संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में अमरावती का बढ़ाया सम्मान

विदर्भ स्वाभिमान,23 अक्तूबर

वर्तमान समय में तनावपूर्ण जीवन में छोटी-मोटी बात को लेकर लोगों द्वारा विशेष रूप से युवा पीढ़ी द्वारा आत्महत्या जैसा कदम उठाया जाता है. यह मानसोपचार संबंधी समस्या होती है. ऐसे में अगर किसी का मार्गदर्शन मिल जाए तो इस तरह की स्थिति से बच सकते हैं. मानसोपचार का विषय अत्याधिक महत्वपूर्ण विषय होता जा रहा है. इसके महत्व को समझने से जीवन की कई समस्याओं का निराकरण भी हो सकता है. इस आशय का प्रतिपादन राष्ट्रीय मानसोपचार विशेषज्ञ संगठन के अध्यक्ष और सेवाभावी संगठन के लायन्स के भीष्म पितामह के रूप में स्थान रखने वाले डॉ.लक्ष्मीकांत राठी ने किया. विदर्भ स्वाभिमान के संयुक्त परिवार-पर्यावरण संतुलन तथा मानव सेवा की थीम पर आधारित दीपावली विशेषांक को उन्होंने शुभकामनाएं दी. नाचते समय हार्ट फेल हो जाना, खेलते समय मौत सहित कई चौकाने वाली घटनाएं हो रही हैं. इन सभी के लिए मानसिक तनाव जिम्मेदार होता है. लेकिन इसे हल्के में लिया जाता है. स्वास्थ्य का सबसे बड़ा दुश्मन मानसिक तनाव होता है. लेकिन इसे मेंटल समझकर लोगों द्वारा समुचित जगह पर जाने और इलाज के अभाव में यह बढ़ता है. इसलिए मानसिक तनाव को समय रहते विशेषज्ञों के पास जाकर रोकने का प्रयास करना चाहिए. बेहतरीन स्वास्थ्य के लिए यह सबसे महत्वपूर्ण होता है, इस आशय का प्रतिपादन राष्ट्रीय मानसोपचार विशेषज्ञ संगठन के अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीकांत गोवर्धनदास राठी ने किया.

विदर्भ स्वाभिमान को दिए गए साक्षात्कार में डॉ. राठी ने बढ़ती आत्महत्याओं , युवाओं में गुस्सा होने के साथ ही अन्य कई परेशानियां व्यक्ति का स्वास्थ्य बिगाड़ती हैं. स्वस्थ मन ही स्वस्थ शरीर का कारक रहता है. हेल्दी माइंड इन हेल्दी बॉडी का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि जीवन में लक्ष्य तय कर आगे बढ़ने से सफलता मिलती है. सफलता या मुकाम हासिलि करने के बाद प्राथमिकता तय करते हुए काम करना चाहिए. मेहनत से हासिल सफलता उर्जा देती है.

संयुक्त परिवार होता महत्वपूर्ण

लायंस के अमरावती के भीष्म पितामह कहे जाने वाले डॉ. लक्ष्मीकांत राठी ने कहा कि कोरोना ने लोगों को स्वास्थ्य के बारे में जागरूक किया है. बच्चों में स्वास्थ्य संबंधी शिकायत पर उन्होंने कहा कि आज संयुक्त परिवार नहीं है. हम दो,हमारे दो के कारण बच्चों को समुचित संस्कार नहीं मिल पाते हैं. माता-पिता काम पर रहने के बाद बच्चों का साथी मोबाइल,टीवी रहता है. उनके सवालों का जवाब देने की फुर्सत भी माता-पिता में नहीं रहने वाली स्थिति है. बालमन कोमल होता है, वे जैसा देखते हैं, स्वयं को उसमें ढालने का प्रयास करते हैं. आज अमीर क्या, गरीब क्या, सभी तनाव में जी रहे हैं, यही बीमारियों का सबसे बड़ा कारण है. लोगों की ड्राइंग रूम की जिंदगी अलग और बाहरी जिंदगी पूरी तरह से अलग है. नींद में कमी को बीमारी की दस्तक बताते हुए इसका समय रहते मानसोपचार विशेषज्ञ से कारण और निवारण करने की सलाह देते हैं.तनाव जिंदगी की परछाई बन गई है. उन्होंने स्पष्ट किया कि मानसिक बीमारी को लोग पागलपन मानते हैं. जबकि ऐसा बिल्कुल नहीं है. दोनों अलग-अलग बाते हैं. लेकिन इसका पता नहीं चलने से गलत इलाज से समस्या बढ़ती है. डिप्रेशन सभी छिपाने का प्रयास करते हैं. दिल का दौरा पड़ने पर सभी को बताते हैं लेकिन डिप्रेशन की तकलीफ से ठीक होने का जिक्र तक नहीं किया जाता है. इसके लिए जागरूकता का अभाव है. मस्तिष्क में कुछ रासायनिक तत्व कम होने से भी डिप्रेशन तथा दिमाग संबंधी परेशानी होती है. इसका उपचार समय पर जरूरी होता है. वर्ना सिजोफेनिया होता है. आत्महत्या की प्रवृत्ति बढ़ने में डिप्रेशन ही जिम्मेदार रहने की बात कही. बायोपोलर डिस्आर्डर भी इसके लिए जरूरी है. ऐसी स्थिति के लिए लोगों से आगे आने का आग्रह उन्होंने किया. उनके मुताबिक उन्हें मेंटल हेल्थ शब्द पर एतराज है. इसे माइंड हेल्थ, सॉयकॉलॉजिकल हेल्थ कहा जाना चाहिए. वैसे भी डिग्री उन्हें एमडी इन सायकॉलॉजिकल में मिली है.

दिलदार समाजसेवी, राजा माणुस थे डी.के. सिंह

विदर्भ स्वाभिमान की आदरांजलि

आए हैं सो जाएंगे राजा रंक फकीर, एक सिंहासन चढ़ि चले, एक बंधे जंजीर, जीवन में जिसने जन्म लिया है उसका मारना अटल है. लेकिन जन्म से लेकर दुनिया से विदा होने तक हमारे कर्म हमें अच्छा या बुरा बनाते हैं और दुनिया भी अच्छे लोगों को कभी भूलते नहीं और जिन्होंने जीवन में किसी को तकलीफ दी है ऐसे लोगों को जाने के बाद भी माफ नहीं करती. दुष्यंत कुमार सिंह उर्फ डीके सिंह जहां यारों के दिलदार यार थे, वहीं सफल व्यवसायी के साथ समाजसेवी, गरीब तथा जरूरतमंद की मदद करने के लिए सदा तत्पर रहने वाले व्यक्ति थे. न्यू सांगानी नगर निवासी डी.के.सिंह स्पष्ट व्यक्ति थे वहीं आदर्श परिवार प्रमुख कैसा होना चाहिए, यह उनसे सीखने लायक है. मेरे जीवन में जहां भी बड़े भाई के रूप में उनकी जरूरत पड़ी होगी, मेरा यह दिलदार भाई सदा मेरे पीछे खड़ा रहा. उनकी अपार लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है उनकी अंतिम यात्रा में हजारों लोग शामिल थे और सभी की आंखें नम थी. धन दौलत कोई भी कमा सकता है लेकिन लोगों का यह अपार प्रेम किसी राजा व्यक्ति को ही मिलता है. डीके सिंह आज खुलेगी हमारे बीच नहीं है लेकिन आदर्श परिवार प्रमुख, आदर्श मित्र, आदर्श पति, आदर्श पिता तथा सभी को साथ लेकर चने और किसी की खुशी में खुश होने और दुख में नाराज होने का उनका स्वभाव सदा याद किया जाएगा. प्रभु उनकी दिव्य आत्मा को मोक्ष प्रदान करें हम सभी मित्रों की ओर से प्रभु चरणों में हम यही कामना करते हैं.विदर्भ स्वाभिमान परिवार विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है और डीके सिंह अपने कार्यों के चलते अमर रहेंगे, यह विश्वास प्रभु के चरणों में व्यक्त करता है.सेवाभाव वह अमूल्य गुण है जो किसी व्यक्ति को महानता की ओर ले जाता है.समाजसेवा केवल कार्य नहीं, बल्कि एक जीवन दर्शन है – जिसमें दूसरों के दुःख को अपना समझकर, उनके कल्याण के लिए निस्वार्थ भाव से कार्य किया जाता है.आदर्श सेवाभावी समाजसेवी वह होता है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के हर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य करते थे. वह गरीब, पीड़ित, असहाय, और वंचितों की सेवा को ही अपनी सच्ची पूजा मानता है.उनके कार्य का उद्देश्य किसी प्रकार का लाभ नहीं, बल्कि केवल समाज का हित होता है.जाति, धर्म, भाषा या वर्गभेद से ऊपर उठकर सभी के साथ समान व्यवहार करते थे. आदर्श सेवाभावी समाजसेवी डी.के.सिंह समाज के लिए एक दीपक के समान थे. जो स्वयं जलकर दूसरों के जीवन में प्रकाश फैलाते रहे.उनके कार्य मानवता को जीवंत रखते हैं और समाज में एक नई ऊर्जा, नई दिशा और नई प्रेरणा भरते है.

डी.के.सिंह का स्वर्गवास

अमरावती–शहर के प्रसिद्ध व्यवसायी, डीके इंजीनियर और कान्ट्रेक्टर के संचालक, ओम महेश्वर मंदिर के अध्यक्ष/ दुष्यंत कुमार सिंह उर्फ डी.के.सिंह का मंगलवार को स्वर्गवास हो गया.वे ५९ वर्ष के थे.

मानवता की सेवा को प्रभु सेवा मानने वाले डी.के. सिंह के देहांत से क्षेत्र में शोक व्याप्त है. न्यू सांगानी नगर स्थित उनके निवास से बुधवार को सुबह १०:३० बजे अंतिम यात्रा निकली और हिंदू स्मशान भूमि में अत्यंत शोकाकुल माहौल में उन पर अंतिम संस्कार किया गया. उनके पश्चात तीन भाई, पत्नी, पुत्र आकाश, पुत्री निशा सहित भरापूरा परिवार शोकाकुल छोड़ गए हैं.

सेवाभावी, शिक्षा सेवी, छात्र हितैषी प्राचार्य

अभी तक सैकड़ों पुरस्कारों से जिन्हें नवाजा गया

जीवन में शिक्षक या प्राचार्य को देश का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी. व्यवसायिकता के इस दौर में आज शिक्षा भी जहां व्यापार बन गई है,वहीं आज भी कई ऐसे प्राचार्य हैं जो छात्रों का जीवन संवार कर राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देने का कार्य कर रहे हैं. इंदौर पोदार इंटरनेशनल विद्यालय के प्राचार्य सुधीर महाजन ऐसे ही एक आदर्श व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने करोड़ों रुपए कमाने के कई ऑफर ठुकराते हुए शिक्षा सेवा के माध्यम से राष्ट्र निर्माण कार्य में अपना योगदान देने का फैसला किया और आज लाखों छात्रों का जीवन संवारने में योगदान दे रहे हैं.

शिक्षा के क्षेत्र में पूरी तरह से समर्पित रहने के कारण उन्हें अभी तक राज्य स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक के कई पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं. विदर्भ स्वाभिमान के साथ बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में विश्व का नेतृत्व करने की क्षमता पहले से ही है. जिस तरह सकारात्मक सोच के साथ किया गया कोई भी कार्य सदा सफलता देता है,इसी तरह जब हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी का बेहतरीन तरीके से निर्वहन करता है तो निश्चित तौर पर इसका लाभ परिवार से लेकर राष्ट्र तक होता है. हम पर जो जिम्मेदारी सौंपी गई है, अगर हम उस जिम्मेदारी का सही तरीके से निर्वहन करें तो निश्चित तौर पर हमें मान सम्मान के साथ समाज तथा राष्ट्र के निर्माण में अपना योगदान देने का मौका मिलेगा और इसका संतोष भी मिलेगा. माता-पिता और संयुक्त परिवार खुशी का आधार होते हैं. लेकिन दुर्भाग्य की बात है कि आज संस्कारों के अभाव में कई बार परिवार बिखर जाते हैं. परिवार में अगर एकता है तो वह सबसे बड़ी ताकत बनती है और परिवारों की ताकत मिलकर समाज मजबूत होता है और समाज से राष्ट्र मजबूत होता है.

कम से कम अपेक्षा रखें

जीवन में सुख का सबसे बड़ा कारण किसी से अपेक्षा नहीं रखना होता है. जब हम अपेक्षा रखते हैं और उसकी पूर्ति नहीं होती तो दुख होता है लेकिन अगर हम अपेक्षा ही नहीं रखें तो दुख होने का कारण ही नहीं होता है. सम्मान, ज्ञान, सत्कर्म हमेशा बढ़कर मिलता है जबकि स्वार्थ, गलत स्वभाव अपनों की भी नजरों से उतार देता है. जीवन में अगर हम किसी को कुछ नहीं दे सकते हैं कम से कम हमारे शब्दों से उस व्यक्ति को खुशी अवश्य दे सकते हैं.

पहल है सराहनीय

विदर्भ स्वाभिमान द्वारा इस बार दीपावली की थीम संयुक्त परिवार-पर्यावरण संतुलन-मानव सेवा रखे जाने की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि वर्तमान में दुख का कारण धन दौलत नहीं बल्कि एक दूसरे को समझने में असफलता है. संयुक्त परिवार जहां खुशी का अपार माध्यम होता है वहीं दूसरी ओर इसके कारण परिवार की प्रगति और तरक्की सुनिश्चित होती है. पर्यावरण संतुलन समय की जरूरत है आज जिस तरह से बीमारियां तेजी से बढ़ रही हैं और युवाओं की मानसिकता पर असर हो रहा है, उसके चलते पर्यावरण संतुलन को गंभीरता से लेना जरूरी हो गया है. हर व्यक्ति को मानवता की सेवा में अपना योगदान देने का प्रयास करना चाहिए. अपने लिए जिए तो क्या जिए, जीवन तो तभी सार्थक होता है जब हम स्वयं के साथ किसी पीड़ित के लिए भी जीने का प्रयास करें.

विद्यालय के प्राचार्य यदि सेवाभावी हों, तो वे शिक्षा को केवल पेशा नहीं, बल्कि एक सेवा के रूप में निभाते हैं. जब वे शिक्षा सेवी बनते हैं, तो उनका हर प्रयास विद्यार्थियों के ज्ञान, संस्कार और व्यक्तित्व विकास के लिए समर्पित होता है.प्राचार्य सुधीर महाजन ऐसे ही आदर्श प्राचार्य हैं, जिन्होंने अपने कार्यों से अमरावती पोदार इंटरनेशनल विद्यालय को कामयाबी की बुलंदी पर पहुंचाने के बाद इंदौर पोदार इंटरनेशनल विद्यालय को शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां प्रदान करने का संकल्प लिया है और इस दिशा में तेजी से प्रयास कर रहे हैं.उनका नेतृत्व विद्यालय को नई दिशा देता है, शिक्षकों में प्रेरणा और छात्रों में आत्मविश्वास भरता है. दीपावली के पावन पर्व पर उन्होंने समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं दी है और सभी का जीवन खुशियों से भरा रहने की कामना की है.

एकता की ताकत को समझना होगा

संयुक्त परिवार होता है खुशियों का भंडार - संजय छांगानी

अमरावती-वर्तमान दौर में एकता का महत्व लोग नहीं समझ पा रहे हैं. संयुक्त परिवार जहां एकता की ताकत का प्रतीक होता है वहीं एकता के कारण संपन्नता जहां पड़ती है वही अपार खुशियों के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्या नहीं रहती है. परिवार की एकता, समाज की एकता से राष्ट्रीय एकता बढ़ती है. संयुक्त परिवार जहां सभी को सुरक्षा की गारंटी देता है वही बड़ी से बड़ी मुसीबत आने के बाद आसानी से निपटने में सफलता प्राप्त करता है. समाज की एकता होने पर कई समस्याएं हल हो जाती हैं. इसलिए सदा एक रहे और नेक रहें के सिद्धांत पर चलते हुए स्वयं की प्रगति के साथ समाज की प्रगति के लिए सहयोग देने का प्रयास करें. इस आशय का मत युवा समाजसेवी, पुष्करणा ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष संजय छांगाणी ने व्यक्त किया.

विदर्भ स्वाभिमान के दीपावली विशेषांक को दिए गए साक्षात्कार में उन्होंने कहा कि वर्तमान में समाज की ताकत तभी बढ़ सकती है जब संयुक्त परिवार के माध्यम से परिवार में एकता हो और सभी परिवार में मिलकर समाज की एकता में योगदान दें. ब्राह्मण समाज की एकता के लिए सदा प्रयास करने वाले संजय छांगानी ने बताया कि परिवार की एकता का संकल्प हर सदस्य को लेते हुए निर्मल मन से परिवार की प्रगति के लिए प्रयास करना चाहिए और अन्य को भी प्रेरित करना चाहिए. संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी विशेषता है.यहाँ केवल लोग साथ नहीं रहते, बल्कि भावनाएँ, संस्कार और अपनापन एक सूत्र में बंधे होते हैं. संयुक्त परिवार में दादा-दादी का अनुभव, माता-पिता का स्नेह, और बच्चों की चंचलता - सभी मिलकर एक ऐसा वातावरण बनाते हैं जहाँ हर दिन उत्सव जैसा लगता है. आज पारिवारिक खुशियां गायब होने के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्या पैदा हो रही है. एकता से यह समस्या दूर की जा सकती है.

ऐसे परिवारों में त्याग, सहयोग और प्रेम की भावना बच्चों को जीवन के सच्चे मूल्य सिखाती है.जब हर सदस्य दूसरों की खुशी में अपनी खुशी ढूंढता है, तब परिवार सच में खुशियों का संसार बन जाता है.संयुक्त परिवार में रहते हुए व्यक्ति सुरक्षा, सहारा और स्नेह-तीनों का अनुभव करता है.यही कारण है कि कहा जाता है. संयुक्त परिवार खुशियों का अपार भंडार है, जहाँ दिल मिलते हैं और रिश्ते संवरते हैं.

समस्त देशवासियों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं!

-शुभेच्छुक-

ॲड. दिपक श्रीमाली

अध्यक्ष-श्री अंबादेवी संस्थान एवं जानेमाने अधिवक्ता अमरावती.

त्याग और खुशियों का पर्व है दिपावली : डा.डांगे

अपने लिए जिए तो क्या जिए, मानव जीवन सदैव दूसरों के लिए जीना चाहिए. सबसे करीबी साथी स्वास्थ्य होता है. यह अच्छा रहने के बाद ही धन-दौलत का हम उपयोग कर पाते हैं. ऐसे में हमें स्वयं स्वस्थ रहते हुए समाज तथा राष्ट्र के विकास में भी परमार्थ के माध्यम से योगदान देना चाहिए. यही हमारे जीवन को अमर बनाने का काम करता है. अपने लिए तो पेटभर कर जानवर भी जी लेते हैं. लेकिन परमात्मा ने हमें इन्सान बनाया है. साथ ही हर शास्त्र संदेश देते हैं कि हमें भी खुश रहना चाहिए और जिन्हें खुशियां नहीं मिल पाती हैं, उन्हें भी खुश रखने का प्रयास करना चाहिए.

कोरोना महामारी के दौरान योग के माध्यम से लाखों जिंदगियां बचाने वाले तथा कई देशों में योग की ऑनलाइन कक्षाएं लेने वाले उच्च विद्याविभूषित डॉ. डांगे अमरावती के जहां गौरव हैं, वहीं कार्यक्रम संचालक के साथ ही कई सेवाभावी संगठनों से जुड़कर सामाजिक कामों में भी अग्रणी रहते हैं. उनके मुताबिक दीपावली त्याग का संदेश देने वाला पर्व है. यह हमारी खुशियों के साथ ही अन्यों की खुशियों की प्रेरणा देता है. जिस तरह दीपक स्वयं जलता है लेकिन औरों को रोशनी देता है, उसी तरह हमें भी परमार्थ को जीवन का लक्ष्य बनाते हुए जितना संभव हो, नेक काम करना चाहिए. खुशियां बांटने वालों की खुशी परमात्मा कभी कम नहीं होने देते हैं. दीपावली पर उन्होंने सभी को स्वस्थ, मस्त जीवन की शुभकामनाएं दी. साथ ही कामना की कि सभी की मनोकामनाएं पूरी हों. मेहनत, लगन और समर्पण को महत्व देने वाले डॉ. डांगे कहते हैं कि धनदौलत ही जीवन में सब कुछ नहीं हो सकती हैं. इन्सान को इसका सदैव ध्यान देना चाहिए.

विनम्रता, शालीनता, आत्मीयता संवारती है परिवार

वरदान-बडनेरा के प्रोफेसर कॉलोनी निवासी ६८ वर्षीय सुदर्शन पुखराजजी गांग का कहना है कि कठिन से कठिन स्थिति में भी परिवार के सदस्यों की आत्मीयता खुशी का माध्यम बनती है।

बडनेरा. संपत्ती का संबंध खुशियों से कदापि नहीं हो सकता है. संपत्ती श्रेष्ठ है लेकिन वह सर्वश्रेष्ठ कभी नहीं हो सकती है.

कर्तव्य परायणता,स्वभाव की विनम्रता के साथ ही अपनत्व और अनुशासन ही परिवार का भूषण होता है. जिस परिवार में यह स्थिति होती है, वहीं सही मायने में आनंद होता हैं. स्वभाव की शालीनता और विनम्रता से सब कुछ जीता जा सकता है. यह कहना है सुदर्शन गांग का. उनके मुताबिक परिवार और मित्र परिवार से बढ़कर खुशी कहीं नहीं हो सकती है.

किशोरावस्था में पिता का साया हटने के बाद मातोश्री सुगनीबाई गांग द्वारा संभालने और बडे भाई सुगनचंदजी एवम धरमचंदजी द्वारा परिवार को विकास की दिशा में अग्रसर करने की जानकारी देते हुए उन्होंने बताया कि छोटे भाईयों के साथ ही बहनों की जिम्मेदारी का निर्वहन उन्होंने दायीत्व निभाया.

निजी कामकाज से असरकारी विद्यालय की नौकरी और अरुणकुमार कडू तथा प्रदीपकुमार जैन इनके साथ मिलकर व्यावसायिक आनंद प्रतिष्ठानो की स्थापना के साथ इन सभी क्षेत्र में कामयाबी का सफर तय किया एव जीवन के सफर कई हमसफर बनाये.

परिवार में उच्च शिक्षित बेटे तथा बेटिया और बहुये हैं। उनका कहना है कि जो भी काम करें, उसे लगन के साथ समर्पित होकर करना चाहिए साथ ही शतप्रतिशत परिश्रम भी करना चाहिए.

प्रोफेसर कॉलोनी में छोटे भाई जवाहर एव मनोज गांग के साथ बेटे,बेटियों और बहूओ को मिलकर साथ तीन पीढ़ी एक छत के नीचे यहां पर साथ साथ रहती है. उनका कहना है कि परिवार में हंसी-खुशी रहने पर सफलता स्वयं ही आती है. गांग परिवार में अपार स्नेह और परस्पर विश्वास है. रक्षाबंधन के दिन सामुहिक रक्षाबंधन सभी भाई,बहनो के साथ संपन्न होता है, इसमें सभी भाई, बहनें और बच्चे साथ होते हैं. यह आयोजन सभी को सालभर की उर्जा देने का काम करता है, परिवार का हर सदस्य इसका इंतजार करता है.

परिवार की एकता के साथ ही समाज, राष्ट्र के लिए भी हर व्यक्ति को अपना योगदान देने का निश्चित प्रयास करना चाहिए. सकारात्मक सुकर्म के साथ ही प्रभु और प्रकृति में आस्था रखते हुए जो भी जिम्मेदारी मिले उसे बेहतरीन तरीके से निभाने का प्रयास करने की सीख वे देते हैं. उनका मानना है कि जो बात किताबें नहीं सिखा सकती हैं, वह ज्ञान हमें समय और स्थितियां प्रदान कर देती हैं।सयुक्त परिवार मे रहने की अपनी सुरक्षा और आनंद होता है.

आदर्श समाजसेवी, भक्ति सेवा में अग्रणी सभी के चहेते हैं कमलकिशोर मालानी

अमरावती- अमरावती में धार्मिक और सामाजिक क्षेत्र के साथ राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय रहने वाले कमल किशोर मालानी हरदिल अज़ीज़ व्यक्ति हैं. सेवा भावना जहां कूट-कूट कर भरी है वहीं बिना किसी तरह का शोर शराबा किए जरूरतमंदों की मदद के लिए भी सक्रिय रहते हैं. भक्ति सागर सेवा समिति के प्रमुख के अलावा दर्जन भारत से अधिक संगठनों के पदाधिकारी हैं. विनम्रता और उनकी सादगी किसी को भी प्रभावित करती है. दीपावली को त्याग का पर्व बताते हुए उन्होंने गरीबों और जरूरतमंदों को भी खुशियां बांटने में योगदान देने का आग्रह किया. जिस तरह दीपक स्वयं चलता है लेकिन लोगों को प्रकाश देता है, इस तरह समाज के हर व्यक्ति अपने अलावा अन्य को भी खुशी देने का प्रयास करना चाहिए.

आदर्श समाजसेवी वह होता है जो निस्वार्थ भाव से समाज के उत्थान के लिए कार्य करता है.उनका जीवन दूसरों की भलाई में समर्पित है. वह जाति, धर्म, भाषा या वर्ग का भेदभाव नहीं करता, बल्कि सबको समान दृष्टि से देखता है.

आदर्श समाजसेवी कमल किशोर मालानी का मुख्य उद्देश्य समाज में प्रेम, एकता, सहयोग और सेवा की भावना जागृत करना होता है. वह गरीबों, असहायों, बीमारों और वंचितों की सहायता करता है.समाज की समस्याओं जैसे-अशिक्षा, बेरोजगारी, नशाखोरी, महिला अत्याचार और पर्यावरण प्रदूषण को मिटाने के लिए वह निरंतर प्रयासरत रहते है.वह अपने कार्यों से लोगों में जागरूकता फैलाता है, शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य अभियानों में बढ़-चढ़कर भाग लेता है. उसके व्यक्तित्व में त्याग, करुणा, सहनशीलता, और दृढ़ निश्चय जैसी गुण होते हैं.वे कहते हैं कि आदर्श समाजसेवी वही है जो दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझे और अपने कर्मों से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प ले. ऐसा व्यक्ति सच्चे अर्थों में मानवता का उपासक और राष्ट्र का गौरव होता है.

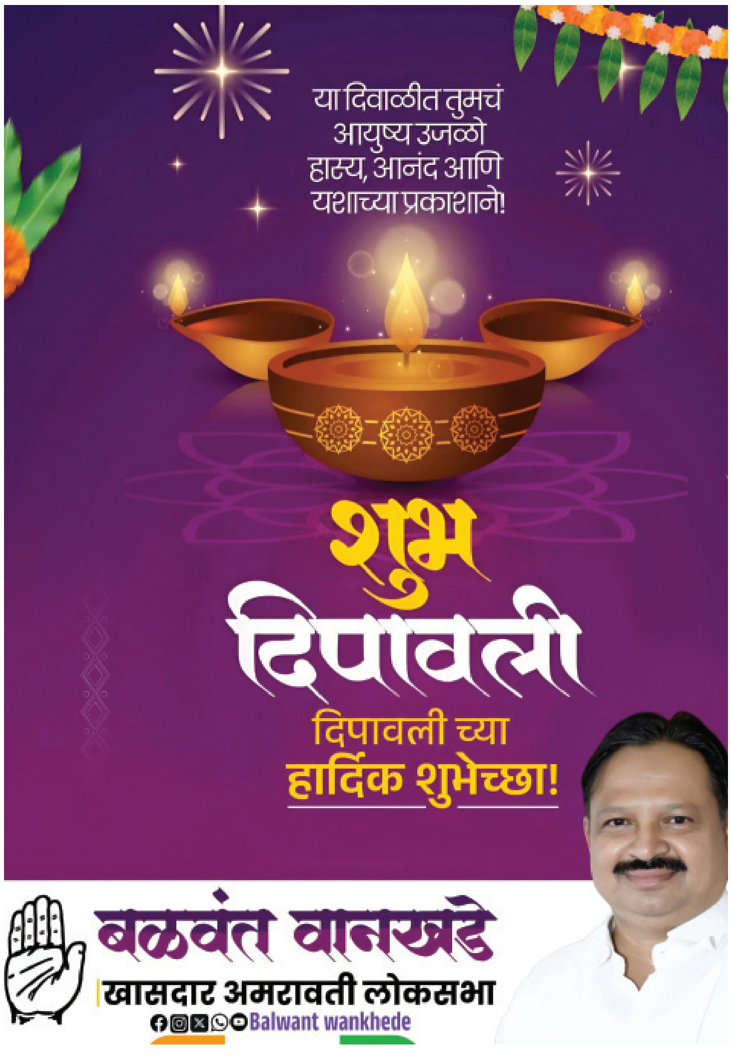

आदर्श अय्यर दम्पति, जिनसे मिलती है प्रेरणा

वर्तमान समय में दाम्पत्य जीवन को लेकर अधिकांश घरों में तनाव की स्थिति होती है, इससे घर की शांति भंग होती है. इस दौर में आज भी चुनिंदा ऐसे दंपति है जिनका पूरा जीवन त्याग और समर्पण के साथ लोगों को खुशियां बांटने में जा रहा है. वे अपने दुख भूल कर सदा दूसरों के चेहरे पर अपनेपन, प्रेम और आत्मीयता से खुशियां देते हैं. कुछ इसी तरह के दंपति के रूप में गौरी गणेश अय्यर का उल्लेख किया जा सकता है.

यह दोनों ही जहां प्रेम और ममता की मूरत हैं, वही उनके साथ कुछ पल बिताना अपार खुशी और सुकून देता है. गौरी अय्यर जहां आदर्श महिला है और शिक्षिका तथा अंध विद्यालय के प्राचार्य के रूप में लाखों नेत्रहीन बच्चों का जीवन संवारने का कार्य किया है, वहीं वहीं शिवराम उर्फ गणेश अय्यर की विद्वता, अपनापन और अपार प्रेम किसी के भी दिल में उनके प्रति जगह बना देता है. स्पष्टता के साथ ही किसी की भावनाओं को यह दोनों कितना महत्व देते हैं, आज के दौर में न केवल मुश्किल बल्कि दुर्लभ है.

प्रेरणादाई दंपति वे होते हैं, जो एक-दूसरे के पूरक बनकर जीवन के हर क्षेत्र में उदाहरण प्रस्तुत करते हैं.उनका जीवन आपसी विश्वास, सहयोग, प्रेम और सम्मान पर आधारित होता है.वे न केवल अपने परिवार को सुखमय बनाते हैं, बल्कि समाज के लिए भी प्रेरणा बने हैं.

ऐसे दंपति जीवन के हर उतार-चढ़ाव में साथ निभाते हैं - सफलता हो या असफलता, वे एक-दूसरे का संबल बनते हैं। जहां एक प्रेरणा देता है, वहीं दूसरा उसे पूरा करने की शक्ति बनता है। उनका जीवन संदेश देता है कि सच्चा संबंध वही है, जो हर परिस्थिति में अडिग रहता है. कठिन से कठिन और मुश्किल दौर में भी कोई किसी तरह खुशियां बटोर सकता है, इसका उदाहरण वे दोनों है.

प्रेरणादाई दंपति अपने कर्म, विचार और व्यवहार से यह सिद्ध करते हैं कि विवाह केवल दो व्यक्तियों का मिलन नहीं, बल्कि दो आत्माओं का एक सुंदर समन्वय है, जो समाज को सच्चे संस्कार और जीवन मूल्यों की दिशा दिखाता है.प्रेम, विश्वास और समर्पण उनकी पहचान होती है.वे एक-दूसरे के साथ-साथ समाज के लिए भी योगदान देते हैं.उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा बन जाता है.

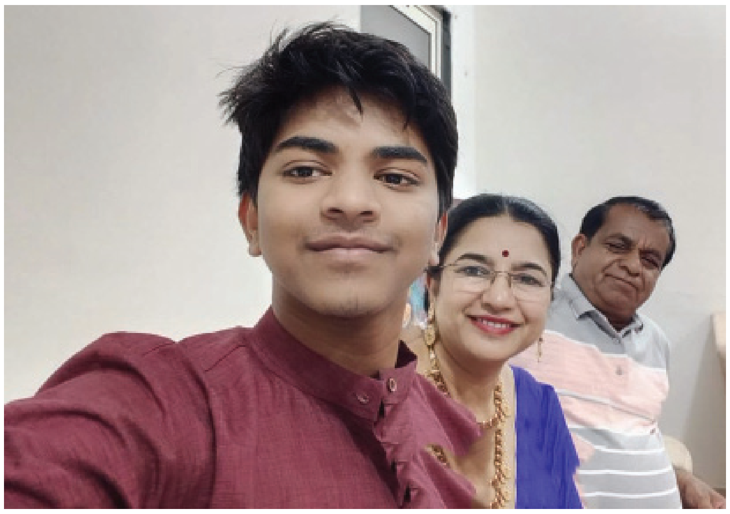

उच्च विद्या विभूषित आदर्श शिरभाते परिवार

स्थानीय महालक्ष्मी नगर निवासी पूर्व प्राचार्य संजय शिरभाते परिवार जहां उच्च विद्या विभूषित है, वहीं बचपन से ही आदर्श संस्कार इस परिवार को मिला है. सेवानिवृत्ति प्राध्यापक पिता, शिक्षिका मां के अलावा दोनों बहुएं भी आदर्श शिक्षिका के रूप में लाखों छात्रों का जीवन सवारने का कार्य करती हैं. दोनों भाई संजय और मिलिंद के बीच का प्रेम न केवल सराहनीय है बल्कि इस बात का परिचायक है कि तमाम आधुनिकता के बाद भी यह परिवार आपसी प्रेम, विश्वास और हम की भावना से किस तरह से प्रेरित है, इसका उदाहरण अन्य लोगों द्वारा दिया जाता है.परिवार का हर सदस्य उच्च विद्या विभूषित रहने के साथ सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहता है. पूर्व प्राचार्य संजय शिरभाते अनगिनत संस्थाओं के पदाधिकारी के रूप में दिव्यांगों, गरीबों तथा जरूरतमंद छात्रों की मदद के लिए सदा तत्पर रहते हैं.

संयुक्त परिवार भारतीय संस्कृति की सबसे सुंदर परंपराओं में से एक है.इसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ प्रेम, सहयोग और आपसी सम्मान के साथ रहती हैं. यह केवल रहने का तरीका नहीं, बल्कि जीवन जीने की एक कला है.परिवार के सभी सदस्य ङ्कहमफकी भावना से कार्य करते हैं, ङ्कमैंफकी भावना को त्यागते हैं. इससे परिवार का प्रेम लगातार बढ़ता है और सभी में सुरक्षा की भावना रहती है.

बच्चे परिवार के वातावरण से ही अनुशासन, नैतिकता और संस्कार सीखते हैं. संजय और मिलिंद के बीच की समझदारी और दोनों भाइयों के प्रेम का उदाहरण अन्य को दिया जाता है.

सभी सदस्य अपनी आय और संसाधन साझा करते हैं, जिससे किसी पर आर्थिक बोझ नहीं पड़ता.

किसी सदस्य पर कठिनाई आने पर पूरा परिवार एकजुट होकर उसका साथ देता है.त्यौहार, पारिवारिक कार्यक्रम और धार्मिक अनुष्ठान पूरे परिवार को जोड़ते हैं.संयुक्त परिवार समाज की मूल इकाई है. यह सामाजिक एकता, नैतिकता और मानवता का आधार है.यहाँ रहने वाले व्यक्ति आत्मनिर्भर, संस्कारी और जिम्मेदार बनते हैं.इसीलिए कहा गया है जहाँ संयुक्तता है, वहाँ समृद्धि और शांति है.परिवार का हर सदस्य जहां एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करता है वही पिता के प्रति अपार सम्मान और प्रेम दोनों ही भाइयों और बहू में भी है.

आदर्श संयुक्त परिवार वह है जहाँ प्रेम, त्याग, सहयोग और सम्मान के सूत्र में सभी बंधे हों. यही परिवार भारतीय संस्कृति की आत्मा है और समाज की स्थिरता का मूल आधार भी.

गरीब बच्चों का जीवन उजियारा करने की पहल

अमरावती- समाज में शिक्षा के क्षेत्र में समानता लाने के उद्देश्य से कार्यरत वननेस मुक्तांगण संस्था गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों के लिए आशा की किरण बनकर उभरी है. वर्ष भर संस्था द्वारा गरीब,झोपड़पट्टी क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों को साक्षर बनाने, उनके माता-पिता को बच्चों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करने सहित अन्य विभिन्न कार्यक्रम होते हैं. आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चे भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करें, इसी लक्ष्य से संस्था निरंतर समाजसेवा के कार्य कर रही है.गरीब तथा जरूरतमंद बच्चों को पढ़ाने के लिए स्वाभिमान नगर झोपड़पट्टी क्षेत्र में हर रविवार को कक्षाएं लेने,गरीब छात्रों को शैक्षिक साहित्य के रूप में मदद, गरीब छात्रों को स्पर्धा परीक्षा की तैयारी में मार्गदर्शन के साथ ही अन्य सामाजिक कामों में भी यह संस्था लगातार प्रयास कर रही है. संस्था के युवाओं की टीम समर्पित भाव से शिक्षा सेवा का कार्य कर रही है. रविवार को उनके द्वारा ली जाने वाली कक्षाओं में झोपड़पट्टी तथा अन्य क्षेत्रों के बच्चे शामिल होते हैं.

शिक्षा के साथ संस्कारों पर जोर-वननेस मुक्तांगण के माध्यम से केवल शैक्षणिक ज्ञान ही नहीं, बल्कि संस्कार, पर्यावरण-जागरूकता, स्वच्छता, नारी-सम्मान और सामाजिक एकता जैसे मूल्य भी बच्चों में रोपित किए जाते हैं.संस्था की पहल से अनेक विद्यार्थी आज आत्मनिर्भर बन रहे हैं और अपने परिवार व समाज का नाम रोशन कर रहे हैं.

यह हैं स्वयंसेवी योध्दा- अमित बनारसे, पंकज हादवे, वैष्णवी मोहोकार, शुभम बलखंडे, तन्मय वैतागे, प्रकाश पांडे, राहुल बेलसरे, वैभवी मिलखे,दीपक सावरकर, अश्विनी राठोड, गौरव चारथळ, वैष्णवी मिल्की, रंजना तायडे, प्रणिता पापळकर, गौरी बोंडे, अक्षय मोने, सम्यक कडू, दिलीप भातकुळकर, आनंद बागडे, यश चिखलकर, आयुष गुल्हाने,समीक्षा बोन्डे, अश्विनी मिलखे, प्रथमेश पखाले,

स्वयंसेवकों की नि:स्वार्थ सेवा-संस्था के अध्यक्ष अमित बनारसे के नेतृत्व में स्वयंसेवक बिना किसी आर्थिक लाभ के, समय और श्रम देकर बच्चों को शिक्षण, कला, खेलकूद और व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं.कई स्थानीय शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता और दानशूर व्यक्तियों ने इस कार्य में सहभाग लेकर संस्था की गतिविधियों को मजबूती प्रदान की है. वननेस मुक्तांगण की यह पहल आज समाज के लिए एक प्रेरणादायी उदाहरण बन गई है.गरीब और वंचित वर्ग के बच्चों के चेहरों पर मुस्कान लाना ही इस संस्था का सबसे बड़ा पुरस्कार है. दीपावली के इस पर्व पर संस्था ने शिक्षा ही सच्चा उजाला का संदेश देते हुए समाज से भी अपील की है कि हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार मिले, यही हमारी सच्ची दिवाली है।

अष्टपैलू, सेवाभावी नेता है अरुण पडोले

संवेदनशील नेता वह होता है जो जनता के सुख-दुःख को अपना समझता है। उसके निर्णय केवल नीतिगत नहीं, बल्कि मानवीयता से प्रेरित होते हैं. वह हर वर्ग, हर समुदाय और हर व्यक्ति की पीड़ा को समझकर उसके समाधान की दिशा में कार्य करता है। संवेदना ही उसके नेतृत्व की आत्मा होती है.अष्टपैलू नेता वह है जो केवल एक क्षेत्र तक सीमित न रहकर शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, संस्कृति, राजनीति, समाजसेवा में सक्रिय हैं.

वह ऐसे नेता हैं जिनमें दृढ़ संकल्प के साथ-साथ विनम्रता, दूरदर्शिता के साथ सहानुभूति की भावना रहती है. दीन दलित और पीड़ितों के लिए सदा सक्रिय रहते हैं. रास्ते के किनारे बैठने वाले गरीब दुकानदारों से ही सामान खरीदने की संवेदनशीलता उनमें है.

आज के समय में जब राजनीति और समाज दोनों में विश्वास की कमी महसूस होती है, तब संवेदनशील अष्टपैलू नेता ही जनता के बीच नई आशा जगाने की क्षमता रखता है। वह विकास को मानवता से जोड़कर समाज में संतुलन और समरसता स्थापित करता है.संवेदनशील अष्टपैलू नेता वह दीपस्तंभ है जो समाज को दिशा देता है, समस्याओं में समाधान खोजता है और हर व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का प्रयास करता है. ऐसे नेताओं की उपस्थिति ही किसी राष्ट्र की सच्ची शक्ति होती है.

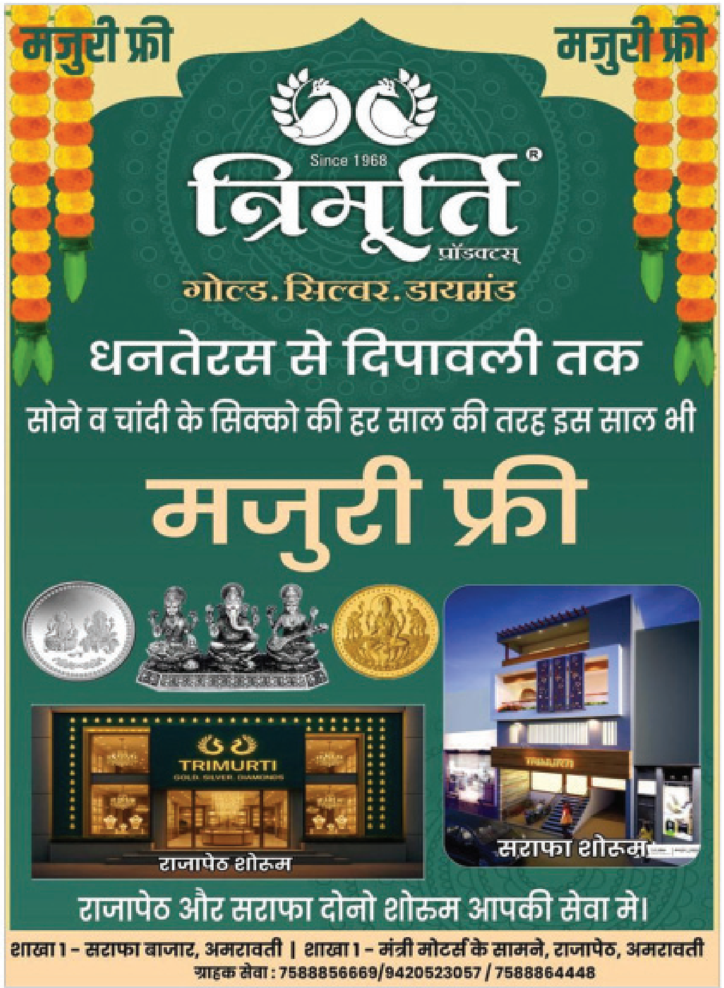
मजुरी फ्री
मजुरी फ्री
Since 1968
त्रिमूर्ति
प्रॉडक्ट्स
गोल्ड. सिल्वर. डायमंड
धनतेरस से दिपावली तक
सोने व चांदी के सिक्को की हर साल की तरह इस साल भी
मजुरी फ्री
TRIMURTI
राजापेठ शोरूम
सराफा शोरूम
राजापेठ और सराफा दोनो शोरूम आपकी सेवा मे।
शाखा 1 - सराफा बाजार, अमरावती | शाखा 1 - मंत्री मोटर्स के सामने, राजापेठ, अमरावती
ग्राहक सेवा : 7588856669/9420523057 / 7588864448

समस्त नागरिकों को
दिवाली की
हार्दिक शुभकामनाएं!
शुभेच्छूक-
अजीत जैन, प्रिया जैन, भूमी जैन, अस्मित जैन व परिवार

दीवाली का त्यौहार हमें बुराई से लड़ने और
अच्छाई के मार्ग पर चलने की शिक्षा देता है,
इस दिव्य अवसर पर, आइए अपने जीवन को
माता लक्ष्मी के आशीर्वाद से रोशन करें।
!! शुभ दीपावली !!

खुशियों का पर्व है दिवाली मस्ती की फुहार है
दिवालीलक्ष्मी पूजन का दिन है दिवाली
अपनों का प्यार है दिवाली
शुभ
दिपावली
की आप सभी को
मंगलमय
शुभकामनाये..!
ARROWMAX
Vixen
SHIV
SPORTS POINT
Namuna Galli No.1,Gandhi Chowk,Amrvavti-444601
Contact : 9823165222 / 9766698841
E-mail : shivsportspoint@gmail.com
http://www.shivsportspoint.com/

घेऊनी दिव्यांचा प्रकाश सोनेरी,
माळोनी गंध मधुर उटण्याचा...
करा संकल्प सुंदर जगण्याचा,
गाठूनी मुहूर्त दिवाळी सणाचा..!
शुभ
दिपावली
हि दीपावली आपणांस
आनंदाची, भरभराटीची, आरोग्यदायी,
जावो हिच मनोकामना!
स्पॅनर
पाना
विजयी निवडणूक चिन्ह
Y.S.P
आ. रवि राणा
आमदार बडनेरा विधानसभा
अध्यक्ष आश्वासन समिती विधानसभा, महाराष्ट्र राज्य
@RaviRanaMLA mlaravirana_ysp mlaravirana

५० वर्षांचे विश्वसनीय परंपरा....
PLA
प्रफुल
पुरुषोत्तमराव अनासाने
ज्वेलर्स
916 हॉलमार्क HUID प्रमाणित सोने चे दागिने मिळतील.
खास दिवाळी सणा निमित्त धनत्रोयोदशीच्या शुभमुहूर्तावर तुम्हा सर्वांसाठी
आकर्षक सुट आता मिळवा हॉलमार्क HUID सोने चे दागिण्याच्या
घडणावळीवर (Making Charge) मिळवा 25% सवलत
दि. 18/10/2025 ते दि. 18/11/2025 पर्यंत
सुवर्ण ठेव योजना
बचत आजची, समृध्दी भविष्याची...
प्रफुल पुरुषोत्तमराव अनासाने ज्वेलर्स ने तुमच्यासाठी सुवर्ण ठेव योजना आणली आहे.
२०२० मध्ये सोन्याची किंमत सुमारे ३५,००० तोळा होती;
तीच २०२५ मध्ये ही सुमारे १,२०,००० तोळ्यापर्यंत वाढली आहे. आजकाल सोने खरेदी करणे खूप कठीण झाले आहे.
सोन्याच्या वाढत्या किमती पाहता प्रफुल पुरुषोत्तमराव अनासाने ज्वेलर्सच्या सुवर्ण ठेव योजनेमध्ये गुंतवणूक करा.
या योजनेअंतर्गत, तुम्ही तुमच्या सोयीनुसार रक्कम ठरवू शकता आणि प्रफुल पुरुषोत्तमराव अनासाने ज्वेलर्स
मध्ये दर महिन्याला ती रक्कम जमा केल्यास तुम्हाला प्रोत्साहन म्हणून १२ वा हप्ता मिळेल.
१२ महिन्यांच्या शेवटी तुमच्याकडे असलेल्या एकूण रकमेसह तुम्ही कोणतेही दागिणे खरेदी करू शकता.
अशा प्रकारे, थोड्या प्रमाणात जमा करून, तुम्ही तुमच्या मुलीसाठी किंवा सुनेसाठी
सोन्याचे आणि हिऱ्याचे दागिने खरेदी करू शकता.
टीप : अधिक माहितीसाठी आणि
इतर नियमांसाठी तुम्ही
प्रफुल पुरुषोत्तमराव अनासाने ज्वेलर्स
मध्ये संपर्क साधू शकता.
• उदाहरणासहित योजनेची माहिती •
तपशिल | सुवर्ण ठेव योजना
तुमचे मासिक योगदान | रू. १०,०००/-
एकूण मासिक हप्ते | ११ महिने
तुमचे एकूण योगदान | रू. १,१०,०००/-
आमच्याकडून खरेदीवरील डिस्काऊंट | रू. १०,०००/-
तुमच्या खरेदीचे मूल्य | रू. १,२०,०००/-

संकलन–सुभाष दाभीरकर, वरुड मो.७०३८७५५३१२

नगर परिषद कार्यालय दर्यापुर जि.अमरावती
नगर परिषद सार्वत्रिक निवडणूक –२०२५

महत्वाची सुचना

दर्यापुर नगर परिषद क्षेत्रातील सर्व नागरिकांना कळविण्यात येते की, दर्यापुर नगर परिषदेची निवडणूक आगामी काळात होवु घातली आहे. त्याकरीता प्रभाग निहाय मतदार यादीचे काम न.प.स्तरा वरुन सुरूअसुन लवकरच मतदार यादी अंतिम होईल. तसेच मतदान केंद्र निहाय मतदार यादी प्रसिध्द करण्यात येईल. त्याकरीता सर्व नागरिकांनी आपले नांव प्रभाग क्रमांक व मतदार यादीतील अनुक्रमांकाची खात्री करुन नगरपरिषद सार्वत्रिक निवडणूकीत आपला मतदानाचा हक्क बजवावा. जागृत मतदारच मजबुत लोकशाहीची गुरूकिल्ली आहे. असे आवाहन मा. मुख्याधिकारी यांचे वतीने करण्यात येतआहे.

खालील वेबसाईट लिंक वरुन मतदार यादीतील नांव तपासणी करता येईल. **https://mahasecvoterlist.in/ObjectionOnClick/DownloadVoterlist** अंतिम मतदार यादी प्रसिध्दी दिनांक ३१/१०/२०२५,मतदान केंद्राची यादी प्रसिद्ध करणे आणि मतदान केंद्र निहाय यादया प्रसिध्द करणे दिनांक ०७/११/२०२५.

मुख्याधिकारी
नगरपरिषद दर्यापुर

सुंदर दर्यापूर स्वच्छ दर्यापुर, आपले शहर स्वच्छ शहर ,
चला प्रदुषण मुक्त दिवाळी साजरी करुया,
दिपावलीच्या सर्व दर्यापुर क्षेत्रातील नागरिकांना हार्दिक शुभेच्छा !

हजारों भक्तों की मनोकामनाएं पूरा करता व्यंकटेशधाम

शहर ही नहीं तो विदर्भ तथा देशभर से भक्त आते हैं यहां दर्शन करने, व्यवस्था की सभी करते हैं सराहना

अमरावती- शहर ही नहीं तो अंबानगरी को धार्मिक नगरी के रूप में देशभर में जाना जाता है. ऐसे में यहां मां अंबादेवी-एकवीरा देवी मंदिर के साथ ही जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम, खल्लार बालाजी मंदिर, महादेव के गड़गड़ेश्वर महादेव मंदिर, सबनीस प्लाट में निर्मित गोल्डन टेंपल महाकाली माता मंदिर सहित कई मंदिर शहर की अध्यात्मिक शान को ऊंचा उठा रहे हैं.जयस्तंभ चौक के करीब स्थिति बालाजी मंदिर लाखों भक्तों का आस्थास्थल है. ट्रस्ट के साथ ही दायमा बंधुओं द्वारा इसका जहां बेहतरीन ढंग से प्रबंधन किया जाता है, वहीं दूसरी ओर शुक्रवार की आरती में पूरा मंदिर भर जाता है. शहर ही नहीं तो आसपास के गांवों से भी बड़ी संख्या में भक्त यहां नियमित रूप से आते हैं. शहर को धार्मिक नगरीके रूप में जाना जाता है. यही कारण है कि अमरावती में बड़े से बड़े आयोजन जहां होते हैं, वहीं दूसरी ओर यहां की जनता भी धार्मिक है. संत-महात्माओं की पवित्र भूमि के साथ ही यहां पर कई मंदिरों की ख्याति राष्ट्रीय स्तर पर है. ऐसे ही मंदिरों में शामिल है जयस्तंभ चौक से चंद कदमों की दूरी पर स्थिति अनाथों के नाथ, निराधारों के आधार भगवान व्यंकटेश्वर बालाजी, महालक्ष्मी माता तथा पद्मावती माता का मंदिर व्यंकटेशधाम. मंदिर का आधुनिकीरण किया गया है. इससे मंदिर जहां चमक रहा है, वहीं दूसरी ओर जागृत मंदिर रहने के कारण हर दिन हजारों की संख्या में भाविक भी यहां पहुंचकर गोविंदा का दर्शन कर जीवन धन्य कर रहे हैं. बालाजी के अनन्य भक्त स्व. रतनलाल दायमा को हुए साक्षात्कार से निर्मित इस मंदिर में आने वाले भक्तों ने स्वयं कई बार इसका अनुभव किया है. शुक्रवार को आरती में उमड़ने वाली भीड़ जहां मंदिर की लोकप्रियता तथा विश्वास का परिचायक है, वहीं दूसरी ओर हजारों शहर के ऐसे भक्त हैं, जिनकी सुबह यहां पूजा-अर्चना और दर्शन से होती है और शयन आरती में भी शामिल होते हैं. कईयों के जीवन में यहां के दर्शन ने चमत्कार का जहां काम किया है, वहीं बड़ी संख्या में भक्तों का कहना है कि मंदिर में उन्हें दर्शन के बाद अपार सुकून की अनुभूति होती है. मंदिर के पुजारी तथा सभी कर्मचारी भी प्रभु सेवा समझकर सेवाएं देते हैं. मंदिर की साफ-सफाई से लेकर यहां सालभर विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम होते हैं. इसमें भक्तों की भीड़ उमड़ती है.

मंदिर के सामने संकटमोचन हनुमानजी की भव्य मूर्ति भक्तों को जहां मुसीबत में भी नहीं घबराने की सीख देती है, वहीं रिद्धी-सिद्धि के दाता गणेशजी की आकर्षक मूर्ति भक्तों को सद्गुण सम्पन्न बनाती है. कहते हैं कि श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से चमत्कारी काम करने की ताकत आती है. जिन्हें विश्वास होता है, उन्हें इस मंदिर में उसका प्रत्यक्ष अनुभव मिलता है. लेकिन नास्तिकों को विश्वास हो नहीं सकता है. जब मन चंगा तो कठोती में गंगा वाली उक्ति श्रद्धाभाव के मामले में लागू होती है. जिस तरह से हवा को महसूस किया जाता है, आक्सीजन हमें जिंदा रखता है लेकिन वह दिखाई नहीं देता है. उसी तरह दुनिया में कोई ऐसी शक्ति है जो दुनिया का संचालन करती है. हमारे कर्मों का हिसाब-किताब करती है. अमरावती शहर ही नहीं तो विदर्भ में सुख्यात जयस्तंभ चौक के करीब स्थित व्यंकटेशधाम लाखों भक्तों का आस्थास्थल बना हुआ है. व्यंकटेशधाम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष एड.आर.बी. अटल के नेतृत्व में सभी सेवा समर्पित पदाधिकारियों तथा सेवाधारियों का प्रभु के प्रति समर्पण देखकर निश्चित तौर पर अपार हर्ष होता है. धार्मिकता के साथ ही मानवता के धर्म को बढ़ावा देने की पहल यहां होती है. अन्नदान जैसे कायक्रम निरंतर चलते हैं. मंदिर के हेडाजी, रामेश्वर भाऊ के साथ ही सभी कर्मचारियों की समर्पित भावना से सेवा निश्चित ही काबिले-तारीफ है. सभी पुजारियों द्वारा नित्य नियम से यहां पर पूजा-अर्चना, अभिषेक का काम किया जाता है. आरती में बड़ी संख्या में भाविक उमड़ते हैं. को मानवता की सेवा का आकार देते हुए अन्नदान जैसे कार्यक्रम चलते रहते हैं. मंदिर के संस्थापक स्व.रतनलाल दायमा भगवान बालाजी के अनन्य भक्तों में से एक थे. फिलहाल मंदिर की बेहतरीन जिम्मेदारी के निर्वहन में उनके बेटे रतनभैया, रमणभाई दायमा तथा गोविंदजी दायमा ने स्वयं को झोंक दिया है.

विदर्भ स्वाभिमान डेस्क

खत्री मूर्ति भंडार को मिलता है ग्राहकों का प्यार

शहर की गांधी चौक स्थित खत्री मूर्ति भंडार ग्राहकों की पसंद पर सदा खरा उतरी है और यही कारण है कि यहां गणेश उत्सव के दौरान तथा दीपावली के दौरान मूर्ति लेने के लिए ग्राहकों के भीड़ बढ़ती है. प्रतिष्ठा के संचालक अमित खत्री पिता के मार्गदर्शन में इस दुकान का संचालन करते हैं. यहां की मूर्तियां जहां हर ग्राहक को प्रभावित करती हैं वहीं कई बार पूरा शहर घूम कर आने के बाद भी जिन्हें मूर्ति पसंद नहीं आती है लेकिन इस दुकान में पहुंचते ही पहले ही नजर में मूर्ति पसंद आ जाती है. मूर्ति की आकर्षकता के साथ मां लक्ष्मी की मूर्ति के लिए यहां पर ग्राहक जमा हुए थे. पिछले कई वर्षों से ग्राहकों का अपार प्यार जहां खत्री मूर्ति भंडार को मिला है वहीं पहली ही नजर में ग्राहकों को मूर्ति पसंद आती है. अन्य स्थानों की तुलना में मूर्ति की कीमत भी समुचित रहने से ग्राहकों का अपार विश्वास खत्री मूर्ति भंडार ने प्राप्त किया है.

जगमगाये अयोध्या के श्री राम, सर्वत्र रोशनाई ने समां बांधा

अयोध्या का दीपोत्सव हमारी सांस्कृतिक स्वातंत्र्य का उद्घोष है। देश के इतिहास में कई ऐसे क्षण होते हैं जब उसकी दशा और दिशा बदल जाती है। दियों का जगमगाना ऐसे ही क्षण का साक्षी होना है। अयोध्या का दीपोत्सव विजय उद्घोष है हजार साल के सतत चलने वाले युद्ध का, शायद करोड़ों आत्माएं इस दिन को देखने के लिए मोक्ष प्राप्त करना अस्वीकार कर दिया होगा। इन दियों की लौ देखकर, अयोध्या की सज धज देखकर ही उन्हें शांति मिलेगी और वे अपने धाम जाएंगी। अयोध्या का दीपोत्सव भारत की पहचान का उद्घोष है, कब्र में लेटे मुर्दों से मुक्ति का उद्घोष है, भारत के लोगों की आकांक्षा क्या है उसके मूर्त स्वरूप का उद्घोष है। अयोध्या का दीपोत्सव भारत की एकता का उद्घोष है, देश के कण कण में राम हैं इस भाव के नाम का दिया अवध में बाला गया है। अयोध्या का दीपोत्सव परिवार, समाज, धर्म और राष्ट्र के प्रति उच्चतम आदर्शों को स्थापित करने का उद्घोष है। समरसता, न्याय, अशोक स्थापित होने का उद्घोष है। अयोध्या का दीपोत्सव भारत के खंडात्मक विभाजन के अखंड होने का उद्घोष है। एक नए सूर्य के उगने का उद्घोष है। एक नई शक्ति, एक नए विश्वास, एक नई ऊर्जा और उल्लास के भाव के स्थापित होने का उद्घोष है। अयोध्या का दीपोत्सव हमारे सामूहिक सामर्थ्य का उद्घोष है साथ ही असंख्य हुतात्माओं के प्रति हमारी कृतज्ञता का द्योतक है। इस क्षण एक नए भारत को मूर्तिमान देखते हुए अपने पूर्वजों को याद कीजिएगा, पुरखों के पुण्य प्रताप और बलिदान से यह दिन देखने का सौभाग्य मिलेगा। अयोध्या का दीपोत्सव पूंजीवाद और साम्यवाद से जूझती दुनिया को रामराज्य का मार्ग प्रशस्त करेगा।

पेज १ से आगे

खुशियां बांटने वाले कभी नहीं होते हैं निराश

से अधिक होता है. जीवन में शब्द और स्वभाव हमेंशा आगे बढ़ते हैं. सकारात्मक विचारों से जीवन बढ़ता है. हर व्यक्ति के शांतिपूर्ण जीवन में सदा योगदान देना चाहिए. परमात्मा अपने हर जीव के लिए प्रेम की अपेक्षा करता है. जिंदगी इक किराए का घर है... जीवन भगवान का उपहार और उनके ही किराए का घर है. यह बात दीगर है कि किराए के मकान को हम अपना मकान समझ लेते हैं,जबकि हमारा स्वामित्व कहीं नहीं है, मिल्कियत में भी मालकियत का भाव कभी नहीं होना चाहिए. जीवन को प्रभु ने दिया है नेक काम करने, उनका स्मरण करने और अच्छे कामों से नाम बनाने के लिए. लेकिन यही काम छोड़कर हम सभी काम करते हैं. दीपावली का पर्व हमें सभी को खुशियां बांटने का संदेश देता है. इस आशय की बात भारतीय जैन संगठन के ट्रस्टी, समाजसेवी सुदर्शन गांग ने कही है. बारिश से किसानों को भारी नुकसान हुआ है, सरकार के साथ ही हमारा भी दायित्व बनता है कि हम खुशियों में उन्हें भी सहयोगी बनाएं.

विदर्भ स्वाभिमान से बातचीत करते हुए संयुक्त परिवार-पर्यावरण संतुलन तथा मानव सेवा की थीम पर प्रकाशित दीपावली विशेषांक को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि आज इस तरह की सकारात्मक पत्रकारिता की अत्याधिक जरूरत है. विदर्भ में सहकारी क्षेत्र की शान अभिनंदन बैंक के मैनेजमेंट बोर्ड के अध्यक्ष सुदर्शन गांग के मुताबिक जीवन तो भगवान का दिया हुआ उपहार है. इसका नेक कामों में उपयोग करने पर निश्चित ही यह और निखरता है. जल,जंगल,जमीन को संवारे,भाग्य संवर जाता है. पर्यावरण संतुलन, जल के महत्व, जंगल की महत्ता पर सदैव बात कहने वाले सुदर्शन गांग के मुताबिक प्रकृति हमें भरपूर देती है. निःस्वार्थ भाव सिखाना है तो पेड़ से सीखें, जो हर व्यक्ति को फल के साथ ही भीषण गर्मी में छांव देता है. नदी परोपकार का उदाहरण है, इसका पानी लाखों लोगों को जीवन देता है. इसी तरह हमारे जीवन में हमें जो मिला है, वह केवल हमारे कर्मो से ही नहीं बल्कि माता-पिता के आशिर्वाद से मिला है. यह ध्यान में रखते हुए समाज के प्रति हमारा भी कर्तव्य बनता है, हम भी किसी जरूरतमंद की मदद कर यह दायित्व निभा सकते हैं. प्रकाश सभी को प्रिय है, सभी जीवन में प्रकाश का प्रयास करना चाहिए. युवाओं में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति पर उन्होंने कहा कि आज हम काम करने से कतराते हैं. संकोच करते हैं. जबकि काम काम होता है. वह छोटा-बड़ा नहीं होता है. हर व्यक्ति को जीवन मिला है, आत्महत्या का किसी को अधिकार नहीं है. जीवन मिला है, जियो, जीने दो. दीपावली पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं देते हुए उन्होंने कामना की कि सभी के जीवन से संकट रूपी अंधेरा खत्म हो और सभी का जीवन खुशियों से भरे. सभी से माता-पिता की सेवा, समाजसेवा और राष्ट्र सेवा में स्वयं को झोंकने और देश को आगे बढ़ाने का संकल्प लेने का आग्रह करते हुए दीपावली की देशवासियों को शुभकामनाएं दी. दीपावली पर खुशियां मनाएं लेकिन हमारी खुशी किसी भी जीव के लिए अगर दर्द का कारण बनता है तो निश्चित तौर पर यह तकलीफदेह लगना चाहिए.

दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा!

डॉ.हेमंत पटेरिया सौ.अनुराधा पटेरिया

दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा!

रवि धुमाळे
सौ. भावना धुमाळे
बडनेरा

दिवाली की हार्दिक शुभकामनाएं!

विदर्भ स्वाभिमान परिवार

दि. अमरावती जिल्हा परिषद शिक्षक सहकारी बँक लि.

काँग्रेस नगर रोड, रेल्वे पुलाजवळ, अमरावती - फोन नं.०७२१-२६७४६८४, फॅक्स : ०७२१-२६७१०४३
Email:amtzpteacherbank@gmail.com | Website - www.zpshikshakbankamt.com

- सर्व शाखा संगणकीकृत, सी.बी.एस. द्वारा सेवा उपलब्ध
- मोबाईल बँकिंग, फोन पे, गुगल पे, ए.टी.एम., आर.टी.जी.एस. / एन.ई.एफ.टी., आय.एम.पी.एस., एन.ए.सी.एच., बी.बी.पी.एस., सी.टी.एस. क्लिअरींगची सेवा उपलब्ध
- बँकेचे कामकाज रविवार पूर्ण वेळ
- विनम्र व तत्पर सेवा (आठवडी सुटी बुधवार तसेच दुसरा व चौथा शनिवार बँक बंद राहील.)
- KYC Norms पुर्ण करुन कोणालाही खाते उघडण्याची सोय
- ठेवीवर सर्वाधिक व्याज,
- सातत्याने ऑडिट वर्ग-अ
- सेफ डिपॉझिट लॉकर्सची सेवा, ५ लाखापर्यंत ठेवीला विमा संरक्षण
- सर्वाकरीता आकर्षक व्याज दरात आवर्ती ठेव योजना (आर.डी)
- मुदत ठेवीवर जेष्ठ नागरिकांना ०.५०% जादा व्याजाची सवलत

बँकेची आर्थिक स्थिती

३१ मार्च २०२५ अखेर — आकडे लाखांत

भाग भांडवल	:	५३९१.५७
एकूण व्यवसाय	:	९६४९७.८१
एकूण ठेवी	:	५७८९०.१६
सी.आर.ए.आर.	:	२१.२९
निव्वळ नफा	:	८४८.८१
नेट एन.पी.ए.	:	०.१२%
एकूण कर्ज	:	३८६०७.६६
ऑडीट वर्ग	:	अ

मा.श्री.गोकुलदास श्री. राऊत — अध्यक्ष
मा.श्री.मो.नाजीम अ. गफ्फार — उपाध्यक्ष
मा.श्री.राजेश प्र. देशमुख — सरव्यवस्थापक

मा. संचालक सर्वश्री. तुळशिदास मु. धांडे, प्रफुल्ल वि. शेंडे, सुरेंद्र वि. मेटे, कैलास मा कडू, उमेश उर्फ उत्तम रा. चुनकीकर, अजयानंद स. पवार, रामदासजी शे. कडू, राजेंद्र ना. गावंडे, मनिष र. काळे, विजय प्र. कोठाळे, संभाजी श्री. रेवाळे, राजेश वि. गाडे, सौ. सरिता दि. काठोळे, सौ.संगीता शा. तडस, ॲड.श्री. राजपाल काशिराम वानखडे (तज्ञ संचालक), ॲड.मो. शकील अहमद मो. गयास (तज्ञ संचालक)

बँकेच्या सर्व सभासदांना व खातेदारांना दिपावलीच्या व नववर्षाच्या हार्दिक शुभेच्छा

स्नेहाचा सुगंध दरवळला..
आनंदाचा सण आला..
विनंती आमची परमेश्वराला,
सौख्य, समृद्धी लाभो तुम्हाला

समस्त जनतेला दिवाळीच्या हार्दिक शुभेच्छा...

श्री. चंद्रशेखर बावनकुळे
महसूल मंत्री महाराष्ट्र राज्य तथा
पालकमंत्री नागपूर व अमरावती जिल्हा

cottonking
AntiStain
100% COTTON SHIRTS & TROUSERS

- Sanika Collection, Opp. Sahakar Bhavan, Near Jaistambh, AMRAVATI.
- Sanika Collection, Manish Nagar, NAGPUR
- Sanika Apparels, Hanuman Aakhada Chouk, YAVATMAL
- Sanika Apparels, Near Aazad Garden CHANDRAPUR

8806376564, 8408992244